प्रस्तावना

इन गर्मियों में भाकली (माले) का छठा सम्मेलन आयोजित हुआ। सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। एक सप्ताह चले इस सम्मेलन ने कई दस्तावेज पारित किये। 'लाल सलाम' के इस अंक में ये दस्तावेज प्रकाशित किये जा रहे हैं।

पुनर्गठन कमेटी ने भाकली (माले) का तब नेतृत्व संभाला जब 1998 के उत्तरार्ध में तत्कालीन नेतृत्व ने पार्टी संगठन में फूट डाल दी तथा सितम्बर 1998 में आहूत चौथे पार्टी सम्मेलन का बहिष्कार करके वह पार्टी संगठन से अलग हो गया। सितंबर 1998 का पार्टी सम्मेलन 1995 से ही पार्टी में उठे विवाद को हल करने के लिए जून 1997 में आयोजित तीसरे पार्टी सम्मेलन द्वारा तय किया गया था। जून 1997 के सम्मेलन में ये विवाद हल नहीं हो पाये थे।

1995-98 के संघर्ष में हमने पार्टी संगठन के औपचारिक ढ़ाचे व संचालन, जन-आंदोलनों व जन-संघर्षों में भागेदारी, औपचारिक जन संगठनों के निर्माण तथा जन संगठन आधारित पार्टी इत्यादि के सवाल उठाये थे। बाद में इस संघर्ष में अन्य विचारधारात्मक-राजनीतिक मुद्दे भी जुड़ गये। (इनका संक्षिप्त वर्णन इस सम्मेलन के 'हमारे पार्टी इतिहास के कुछ महत्वपूर्ण सबक' नामक दस्तावेज में किया गया है।)

1998 के पार्टी सम्मेलन ने पार्टी संगठन और जनता के बीच काम के बारे में उपरोक्त दिशा को स्थापित किया तथा बुनियादी वर्गों में काम को पार्टी की प्राथमिकता घोषित किया। 1998 के सम्मेलन के बाद हम पार्टी संगठन के औपचारिक ढ़ांचे और संचालन तथा जन संगठन आधारित पार्टी की दिशा में आगे बढ़े। 1998 का अंत आते-आते हमने तय किया कि औद्योगिक मजदूर वर्ग को इंकलाब के लिए संगठित करने का काम हमारा केन्द्र बिन्दु होना चाहिए। 1999 के मध्य तक इस दिशा मे व्यावहारिक कदम भी उठा दिये गये।

1999 के मध्य (जुलाई-अगस्त) में ही छात्र संगठन में कार्यरत कुछ पार्टी कार्यकर्ताओं ने पार्टी संगठन के खिलाफ षड़यंत्र किया तथा छात्र संगठन में तोड़-फोड़ की। अन्य मोर्चे पर कार्यरत कुछ पार्टी कार्यकर्ताओं ने भी उनका साथ दिया। पार्टी संगठन ने इनके खिलाफ सांगठनिक कार्यवाही करने के बदले इनसे राजनीतिक संघर्ष चलाया तथा इनकी लाइन को गलत साबित करके उन्हें अलगाव में डाल दिया। अधिकांश कार्यकर्ता पुनः पार्टी संगठन के साथ खड़े हो गये। मुख्य षडयंत्रकारी साथी कायरता का प्रदर्शन करते हुए पार्टी से पलायन कर गये।

1999 की तोड़-फोड़ की यह घटना 1998 की फूट का ही देर से पैदा होने वाला परिणाम (after effect) थी। फूट ने पार्टी भावना का जो क्षरण किया था, पार्टी के नेतृत्व के प्राधिकार का जो विध्वंस किया था, उसका यह परिणाम थी।

इस तोड़-फोड़ को अंजाम देने वाले इन साथियों की दिशा पूर्णतया अर्थवादी थी जिसका पर्दाफाश किया गया और उसे परास्त किया गया। इसी तरह उनके द्वारा बहु वर्गीय, बहु तबकाई आम जन राजनीतिक संगठन के निर्माण पर उठाये गये सवालों का जवाब भी दिया गया।

लेकिन इस राजनीतिक संघर्ष को चलाते समय हमने एक राजनीतिक गलती की। विरोधी साथियों ने मध्यम वर्गीय चादर छोड़कर सीधे मजदूर वर्ग में जाने का सही सवाल उठाया था। लेकिन विरोधी साथियों की बातों का खंडन करने की प्रक्रिया में हमने यह स्थापित किया कि मजदूर वर्ग में काम शुरू करने से पहले पढ़े लिखे मध्यम वर्ग में काम कर एक आधार बना लेना चाहिए तब मजदूर वर्ग में जाना चाहिए। यह गलत अवधारणा है। आज हमारा स्पष्ट मानना है कि एक कम्युनिस्ट क्रांतिकारी संगठन का प्रमुख काम मजदूर वर्ग में होना चाहिए तथा उसे शुरू से ही, चाहे उसकी ताकत कितनी कम हो, मजदूर वर्ग में काम करना चाहिए।

पहले मध्यम वर्ग में काम की अवधारणा हमें विरासत में मिली थी। हमारी गलती यह थी कि हम तब तक इसे अपनाये हुए थे। यही नहीं, इसके कुछ समय बाद तक हम इसे अपनाये रहे। केवल मजदूर वर्ग में काम के हमारे अहसास के गहराने तथा अपने पार्टी संगठन की समस्याओं से जूझते हुए ही हम बाद में इससे अपने को मुक्त कर पाये।

1999 से ही अपने व्यावहारिक काम को हमने औद्योगिक मजदूर वर्ग में अधिकाधिक केन्द्रित किया । इसी के तहत 2000 के अंत में एक बड़े औद्योगिक क्षेत्र में काम शुरू किया गया। हमारा लक्ष्य था कि यथाशीघ्र मजदूरों का एक जनसंगठन खड़ा किया जाय।

शुरू में हमने सोचा था कि मजदूरों का एक जन राजनीतिक केन्द्र खड़ा किया जाय जो पार्टी से नीचे हो लेकिन ट्रेड यूनियन से ऊपर। लेकिन बाद में हमने इस अवधारणा को छोड़ दिया। इसके बदले मजदूरों का एक क्रांतिकारी ट्रेड

यूनियन केन्द्र स्थापित करने की योजना ली गई। इसी के तहत 2006 में हमने मजदूरों का एक मध्यवर्ती संगठन लांच किया।

मजदूर वर्ग में अपने काम को आगे बढ़ाते हुए हमने 2007 की शुरूआत से एक मासिक मजदूर अखबार का भी प्रकाशन शुरू किया जो आगे बढ़े हुए मजदूरों और गैर पार्टी कार्यकर्ताओं को संबोधित होगा।

लेकिन इस दिशा में आगे बढ़ते हुए और इन सब कामों को अंजाम देते हुए भी हमने पाया कि हम जनता के विभिन्न हिस्सों में अपनी पैठ नहीं बना पा रहे हैं, पार्टी संगठन तथा जन संगठनों का तेज विकास नहीं कर पा रहे हैं। हमारे विकास की गति धीमी है तथा हम किंचित् ठहराव का शिकार हो रहे हैं।

इस पार्टी सम्मेलन में अपनी समस्याओं की चीर-फाड़ करने के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचे कि हमारी प्रमुख समस्या क्रांतिकारी जन दिशा की समस्या है। 1995-98 के संघर्ष के बाद हमने रूप के स्तर पर तो समस्याओं का समाधान किया (पार्टी संगठन का औपचारिक ढ़ांचा व संचालन, औपचारिक जन संगठनों का निर्माण, जन आंदोलनों व जन संघर्षों में भागीदारी इत्यादि) लेकिन हम अंतर्वस्तु के स्तर पर समाधान नहीं कर पाये। इस मायने में हम किसी हद तक औपचारिकतावाद और रूपवाद का शिकार रहे। लेकिन इसका मतलब यह कतई नहीं है कि रूप के स्तर पर समाधान ने हमें कोई लाभ नहीं पहुंचाया। आज तक की हमारी प्राप्तियों में इनका काफी योगदान है।

आज हमारी प्रमुख समस्या क्रांतिकारी जन दिशा को लागू करने की है। इसके लिए हमें अपने पंथवादी अतीत के संकीर्णतावाद और पवित्रतावाद से मुक्त होने की जरूरत है।

यहां छठे सम्मेलन के ये दस्तावेज प्रकाशित हैं : अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय परिस्थियों का मूल्यांकन, पार्टी कार्यक्रम (मसविदा), रणकौशलात्मक कार्यदिशा, संविधान, हमारे पार्टी इतिहास के कुछ महत्वपूर्ण सबक, सांगठनिक रिपोर्ट (अंश) तथा राजनीतिक प्रस्ताव।

अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के मूल्यांकन के पहले हिस्से में मूलतः पिछले सम्मेलन से अब तक घटी महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन है जिन्होंने पिछले सम्मेलन में विस्तार से प्रस्तुत हमारे सूत्रीकरणों को सही ही साबित किया। उसमे प्रस्तुत किसी मूलभूत प्रस्थापना को बदलने की जरूरत यह घटनाक्रम नहीं दिखाता।

अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों के मूल्यांकन के दूसरे हिस्से, 'दुनिया एक नई दहलीज पर', में पूंजीवाद के पिछले सौ सालों के विकास का एक व्यापक चित्र प्रस्तुत किया गया है तथा बीसवीं सदी की सर्वहारा क्रांतियों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखा गया है। यह हमें आज की सर्वहारा क्रांतियों, इक्कीसवीं सदी की सर्वहारा क्रांतियों के लिए दूरगामी ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

राष्ट्रीय परिस्थितियों के मूल्यांकन ने भी हमारे पिछले सम्मेलन में प्रस्तुत प्रस्थापनाओं को ही पुष्ट किया। उसमें भी किसी प्रस्थापना को बदलने की जरूरत घटनाओं ने नहीं दिखाई।

पार्टी कार्यक्रम (मसविदा) भारत में समाजवादी क्रांति का कार्यक्रम प्रस्तुत करता है। यह हमारे पार्टी संगठन द्वारा प्रस्तुत भविष्य की अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम का मसविदा है। स्वभावतः ही, भारत की अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ही इस मसविदे को अंतिम रूप देगी।

हमारे इस पार्टी सम्मेलन ने एक रणकौशलात्मक कार्यदिशा भी स्वीकार की। यह हमारे पार्टी संगठन के सीमित अनुभवों पर आधारित है। यह एकदम नाकाफी है इसलिए हमारी इस रणकौशलात्मक कार्यदिशा की भी ढ़ेरों सीमाएं हैं। कहने की बात नहीं कि एक अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी ही सही और परिपक्व रणकौशलात्मक दिशा का निर्धारण कर सकती है और उस पर चल सकती है।

अभी तक हमारे छोटे से पार्टी संगठन का संचालन संगठन के नियमों-कानूनों के सम्बन्ध में जारी सर्कुलरों के माध्यम से होता रहा है। इस सम्मेलन ने एक संविधान भी स्वीकार किया। यह संविधान हमारे पूर्व पार्टी संगठन के लिए है। अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी का संविधान निश्चय ही इससे भिन्न होगा।

1995-98 के संघर्ष के बाद हमने तुरंत 1978 [भाकली (माले) का स्थापना वर्ष] से लेकर 1998 तक के पार्टी इतिहास का सार संकलन पेश नहीं किया जैसा कि 1989 व 1990 की फूट में विरोधी पक्षों ने किया था। हमने पार्टी इतिहास के सार संकलन का काम और उसकी रोशनी में 1995-98 के संघर्ष को भी देखने का काम भविष्य के लिए छोड़ दिया। इसके पीछे सोच यह थी कि घटनाओं के आवेग से पहले मुक्त हो लिया जाय तथा और ज्यादा अनुभव व परिपक्वता हासिल कर ली जाय तब फिर पार्टी इतिहास का सार संकलन किया जाय। 2002 के पार्टी सम्मेलन ने केवल पार्टी इतिहास में हुई फूटों का सार-संकलन किया तथा कुछ सबक निकाले। समग्र सार-संकलन को तब भी आगे के लिए छोड़ दिया गया। अब इस सम्मेलन ने 1978 से लेकर 1998 तक के भाकली (माले) के पार्टी इतिहास का एक सार-संकलन पेश किया है लेकिन यह सार-संकलन भी अतीत पर फैसला सुनाने के दृष्टिकोण से नहीं किया गया है। यह

केवल आज के लिए महत्वपूर्ण सबक निकालने के लिए किया गया है। यह अंतरिम सार-संकलन है। अंतिम सार-संकलन का काम अभी भी भविष्य के लिए छोड़ दिया गया है।

1998 से आज तक का समय हमारा वर्तमान है। इसका इतिहास के रूप में सार-संकलन स्वतः ही भविष्य की चीज है।

यहां सम्मेलन द्वारा स्वीकृत सांगठनिक रिपोर्ट का एक अंश प्रकाशित किया जा रहा है। यह अंश सांगठनिक रिपोर्ट का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह हिस्सा हमारे संगठन की जिन समस्याओं-चुनौतियों को चिह्नित करता है वे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के अन्य पार्टी संगठनों की भी किसी हद तक समस्याएं हैं। भाकली (माले) के विभिन्न धड़ों की तो ये निश्चित ही समस्याएं हैं। इनसे हमें जूझना ही होगा।

अंत में कुछ राजनीतिक प्रस्ताव हैं जो सम्मेलन ने पारित किये थे। इनमें भाकली (माले) के विभिन्न धड़ों से एकता वार्ता पुनः शुरू करने का प्रस्ताव भी है।

'लाल सलाम' के इस अंक के माध्यम से हम अपने पार्टी संगठन के छठे सम्मेलन के इन दस्तावेजों को पूरे कम्युनिस्ट क्रांतिकारी आंदोलन के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं। हम इन दस्तावेजों की कमियों-खामियों पर बिरादर संगठनों की आलोचना आमंत्रित करते हैं। हमें भविष्य में अपनी कमियां-खामियां दूर करने में यह आलोचना मददगार होगी।

पुनर्गठन कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट लीग (माले)